PAPER - I

Part (A+B)

(1) (A) :- फ्रांसिस बेकन :- यह ब्रिटिश राजनीतिज्ञ, दार्शनिक और लेखक थे
कृतियां :- एसेज, डि सैपिएंशिया वेटेरम इंस्टोरेशियो मैग्ना आदि

(B) सराजेवो :- यह यूरोपिय देश बॉस्निया और हर्जेगोविना की राजधानी है।

(C) ट्राटस्की :- रूस के मार्क्सवादी क्रांतिकारी तथा राजनेता
- लाल सेना के संस्थापक
रचनाऐं :- द हिस्ट्री ऑफ रशियन रिवोल्यूशन, परमानेंट रेवोल्यूशन आदी

(D) नागार्जुन :- शून्यवाद के अविष्कारक
- बौद्ध दार्शनिक शिक्षक

(E) अरबेला का युद्ध :- यह सिकंदर महान द्वारा लड़े गए युद्धो में से एक है।

(F) एलोरा का कैलाश मंदिर :- महाराष्ट्र राज्य में स्थित है।

(G) अबुल फजल :- मध्यकालीन मुगल संम्राट अकबर के नौ रत्नो में से एक थे।
• रचनाऐं :- अकबरनामा

(H) गज - ए - सिकंदरी :- भूमी मापन की एक पद्धति / इकाई
• सिकंदर लोदी द्वारा चलाई गई थी

(I) देवेन्द्रनाथ टैगोर :- साहित्य के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता भारतीय 'रविन्द्रनाथ टैगोर' के भाई थे।
- ब्रह्म समाज के संस्थापकों में से एक
- तत्वबोधिनी सभा की स्थापना की थी।

(J) गुरुवायुर सत्याग्रह

(K) ईसुरी :-

(L) घोडा डोंगरी सत्याग्रह :- मध्यप्रदेश के बैतूल जिले में हुआ
- नेतृत्वकर्ता - महान आदिवासी नेता गंजन सिंह कोरकू
- जंगल सत्याग्रह था।

(M) भारत भवन :- मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में स्थित है।
- वर्तमान में विभिन्न उत्सवों का आयोजन इस भवन में किया जाता है।
- वास्तुकार - चार्ल्स कोरिया

(N) एडोल्फ हिटलर :- जर्मन तानाशाह

(O) म०प्र० के 5 बौद्ध स्थल :-
(1) सांची - 3 बौद्ध स्तूप
(2) सतना - भरहुत स्तूप
(3) रीवा - सतधारा स्तूप
(4) खरगोन - कसरावद स्तूप

Q.2

(A) नेपोलियन को क्रान्ति पुत्र की संज्ञा उसके साम्राज्य विस्तार तथा युद्ध नीति की देन है।

- यह फ्रांस की क्रान्ति के प्रमुख सेनापति थे
- उसमे अद्भुत सैनिक तथा प्रशासनिक क्षमता थी उसके सामने कोई यूरोपिय शक्ति टिक नही पा रही थी
- नेपोलियन ने इटालियन अभियान मिस्त्र तुर्की आदी अभियान किए तथा विजय प्राप्त की
- ब्रिटिश भी नेपोलियन की विजय से भयभीत हो गए था भारत मे सहायक संधि जैसी नीति चलाकर अपने भारतीय उपनिवेश को सुरक्षित रखने का प्रयास करने लगे।
- रूस पर भी आक्रमण किया परन्तु वहाँ खराब मौसम के कारण राज्य विस्तार नही कर पाया
- इस तरह नेपोलियन के इन विजय अभियानो के कारण इसे क्रान्ति पुत्र कहा जाता है।

(B) वर्साय की सन्धि : प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात जर्मनी के साथ की गई एक क्रुरतम संधि थी, जिसके द्वारा जर्मनी पर युद्ध का आरोप लगाया गया था तथा सारी भरपाई करने का प्रयत्न किया गया था। जर्मनी के भ अतः कहा जा सकता है कि यह सन्धि केवल एक युद्ध विराम काल था। इस संधि के तहत —

(1) जर्मनी को दो भागो मे बाँटकर पोलैण्ड

गलियारा बना दिया गया था।
- अलसास व लॉरेंस क्षेत्र फ्रांस को दे दिए गए थे।
- सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्र नष्ट कर दिए गए थे।
- पहले से ही आर्थिक बदहाली से जूझ रहे जर्मनी पर और आर्थिक दायित्व डाल दिया गया था।
- अतः जर्मनी के लिए यह अपमान का घूँट पीकर ज्यादा समय तक चुप रहना संभव नहीं था।
अतः कहा जा सकता है कि यही सन्धि द्वितीय विश्व युद्ध का कारण बनकर सामने आई जो 20 वर्षों का केवल शान्ति काल सिद्ध हुई

(e) बौद्ध धर्म की देन :—
6ठवीं शताब्दी ईसा पूर्व में प्रादुर्भाव हुए इस धर्म ने समाज को नि. उपहार दिए।

(1) समानता की सीख।
(2) कर्मकाण्डों का परित्याग कर सच्चे व सरल धर्म की परिभाषा दी।
(3) अहिंसा, सत्य
(4) समाज सुधार किया तथा सभी वर्णों के लोगों के लिए धर्म का मार्ग खुला रखा।
(5) बुद्ध ने मध्यम मार्ग का रास्ता बताया।
(6) अष्टांगिक मार्ग — आदि।

बौद्ध धर्म आज भी संसार के विभिन्न देशों में अपने उचित नियम धर्म व सरल मार्ग के कारण प्रचलित है।

(11) सामंतवाद :- एक ऐसी समाज व्यवस्था से जन्मा है। जहाँ राजा तथा प्रजा के मध्य एक शक्तिशाली व्यवस्था की दृष्टिगोचर होती है जिसे सामंतवाद कहा जा सकता है।
- यह सामंत राजा के प्रति वफादार होते थे। परन्तु कई स्थितियों में यह राजा के विरुद्ध षड्यंत्र करते थे।
- तथा राज्य के विरोधियों के साथ भी कभी-कभी अपने लाभ के लिए मिल जाते थे।
- इतिहास में कई युद्धों में राजपूतों की हार का कारण उनके सामंतों की ईर्ष्या तथा द्वेष की भावना बनी।
- महाराणा प्रताप पृथ्वीराज चौहान आदी के समय भी सामंतों का विश्वासघाती व्यवहार देखा गया था।

(F) ⇒ अरबी भाषा में लिखे गए "चचनामा" ग्रंथ में विवरण मिलता है, कि नवी सदी से ही भारत व अरब के मध्य संपर्क व संबंध की शुरुआत हो चुकी थी।
आक्रमण के प्रभाव —
- मोहम्मद बिन कासिम पहला सफल अरब आक्रमणकारी था इसे विशेष के लिए भारत में कई स्थानीय शक्तियों का उदय हुआ जैसे - गुर्जर प्रतिहार, राष्ट्रकूट तथा चालुक्य।
- अरबी प्रभाव के परिणाम स्वरूप ज्ञान व शिक्षा का हस्तान्तरण हुआ, भारत में स्थानीय भाषाओं साहित्य लेखन प्रारम्भ हुआ उदाहरण के लिए 13वी - 14वी सदी में अमीर खुसरो द्वारा खड़ी बोली की शुरुआत हुई।

(F) अकबर की राजपुत नीति :-

- शहन - सूझ - बूझ पर आधारित थी।
- अकबर ने राजपूतों की शत्रुता से अधिक उनकी मित्रता को महत्व दिया।
- इसके तहत जो राजपुत शासक, मुगल शासक की अधीनता स्वीकार कर लेते थे। उन्हे साम्राज्य में ऊँचे पद व मनसब दिया जाता था।
- वैवाहिक संबंध स्थापित किया जाता था।
- जैसे - जोधा बाई तथा अकबर का विवाह
- जो शासक मुगल अधीनता नही स्वीकार करता था उसे बादशाह से युद्ध करना पड़ता था, जिसे महाराणा प्रताप के संदर्भ में लिया जा सकता है।
- अकबर ने सभी राजपुत राजाओं से सिक्के जारी करने के अधिकार ले लिए थे। अधीनस्थ राजपुत राज्यों में शाही सिक्कों का प्रचलन भी करवाया।

G. धन का निष्कासन एक सिद्धांत के रुप में भारतीय अर्थशास्त्रीयो द्वारा बताया गया है। जिसमे सर्वप्रमुख नाम दादा भाई नरौजी का है जिन्होने ~~अपनी पुस्तक~~ सबसे पहले बताया कि भारतीय धन व संसाधनों का एक पक्षीय हस्तान्तरण हो रहा है। (अर्थात ब्रिटिश भारत के संसाधनो का उपयोग करके यही से माल खरीद कर ब्रिटेन भेज रहे थे, तथा वहाँ से धन नही ला रहे थे)

इसके प्रभाव :-

1. भारत में अकालो की बारम्बारता
2. किसानों तथा व्यापारियों (भारत के सभी वर्गों की) आर्थिक स्थिति में गिराव
3. 1901 से 1921 की जनगणना में जनसंख्या में आई ~~भार~~ भारी गिरावट

- भारतीय कुटिर उद्योग ध्वस्त हो गया। आदि

(H) ⇒ आर्य समाज :–

आर्य शब्द का अर्थ – श्रेष्ठ, कुलीन तथा प्रगति शील है

आर्य समाज एक हिन्दू सुधार आंदोलन है, जिसकी स्थापना स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1875 में की थी। आर्य समाज में शुद्ध वैदिक परम्परा का महत्व समझाया गया तथा इसे पाश्चात्य संस्कृति से श्रेष्ठ बताया गया है। परन्तु कर्मकाण्डों को अस्वीकार किया गया है। छुआछूत का विरोध किया गया तथा समता मूलक समाज की ओर लोगो का ध्यान आकर्षित किया। शूद्रों को भी यज्ञोपवीत धारण करने तथा वेद पढ़ने का अधिकार दिया

- दयानंद सरस्वती द्वारा रचित "सत्यार्थ प्रकाश" आर्य समाज का मूल ग्रंथ है।
- आर्य समाज का आदर्श वाक्य - "विश्व को आर्य बनाते चलो"

Q. 1857 की क्रान्ति में म०प्र० का योगदान :–

1857 की क्रान्ति सम्पूर्ण भारत में देखी गई प्रथम तथा भयंकर क्रान्ति थी। जिसकी शुरुआत म०प्र० में नीमच में हुई जहाँ पैदल तथा घुड़सवार टुकड़ियों ने विद्रोह किया। नीमच छावनी को आग के हवाले कर दिया।

म०प्र० के कई स्थानों पर विद्रोह हुआ :-
ग्वालियर मंडला शिवपुरी, महू एव इंदौर
रामगढ़ (सिहोरी) आदि।

(7) म०प्र० के प्रमुख जैन तीर्थ स्थल :-
- जैन सत्य व अहिंसा पर आधारित 6वी शताब्दी मे उदित एक धर्म है।
(1). सोनागिरी - यह दतिया मे स्थित है तथा यहाँ 108 मंदिर है।
(2) पुष्प गिरी - देवास मे स्थित जैन शिक्षा केन्द्र है
(3) मंगल गिरी - सागर
(4) कुंडलपुर - दमोह
(5) पार्श्वनाथ तथा आदिनाथ मंदिर - खजुराहो।
(6) मुक्तागिरी - बैतूल
(7) मोहनखेड़ा - मोहनखेड़ा (धार)

3 (A) फ्रांस की क्रांति 1789 ई. की घटना है जिसने मानव जीवन तथा समाज को अत्यधिक प्रभावित किया।
यह क्रान्ति स्वतंत्रता समानता तथा बंधुत्व पर आधारित थी इस क्रान्ति मे बहुआयामी सकारात्मक परिवर्तनो के साथ कुछ नकारात्मक परिवर्तन व विवाद भी उत्पन्न हुए।

क्रान्ति के उद्देश्य :-
- समतामूलक समाज की स्थापना तथा राजत्व के दैवीय सिद्धान्त का खंडन

- मौलिक स्वतंत्रता की प्राप्ति, उदाहरण - धर्म, प्रकाशन, लेखन, भाषण आदि।

- बंधुत्व की भावना का विकास करना।

- फ्रांस की क्रान्ति अपने इन उद्देश्यों की प्राप्ति मे सफल हुई तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत मे भी स्वतंत्रता, समानता व बंधुत्व के फ्रांसिस क्रान्ति के सिद्धान्त को भारतीय संविधान मे शामिल किया गया। जो अन्य देशों द्वारा भी अपनाया गया तथा यह इस क्रान्ति की सफलता को सिद्ध करता परिणाम है।

- क्रान्ति के परिणाम स्वरुप लोकतंत्र का उदय हुआ।

- राष्ट्रवाद का प्रसार :- फ्रांस की क्रान्ति से राष्ट्रीय गौरव एवं सम्मान का ध्येय व्यक्तिगत स्तर पर विस्तारित हुआ।

- मानवतावाद का प्रसार

- धर्मनिरपेक्षता का विस्तार आदि सकारात्मक परिवर्तन हुए जिसका प्रभाव सम्पुर्ण मानव जाति पर हुआ।

3(B) अशोक महान सम्राटों में भी महान था, यह कथन अशोक द्वारा किए गए कार्यों द्वारा सिद्ध होता है। जो प्रारम्भ में तो युद्ध नीति अपनाता था परन्तु कलिंग युद्ध ने उसका हृदय परिवर्तन कर दिया। तथा वह समाप्त कल्याण के कार्य में जुट गया तथा बौद्ध धर्म का अनुसरण किया।

- अशोक की उदारता, दया की भावना आदि ने उसे अन्य महान सम्राटों से भी महान इतिहास के धरातल पर सिद्ध किया।
- अशोक के इतिहास की जानकारी उसके अभिलेखों तथा विवरणों से प्राप्त होती है।
- प्रथम शिलालेख में वर्णित है:— "सभी मनुष्य मेरी संतान है"

इस प्रकार के उच्च प्रजापालन के गुण अशोक के अलावा किसी सम्राट में दिखाई गोचर नहीं हुए।

- द्वितीय शिलालेख — पशु चिकित्सा व मानव चिकित्सा तथा लोक कल्याण कारी कार्य का निर्देश अशोक द्वारा दिया गया था।

- सर्वधर्म समभाव की चर्चा भी अशोक की नीतियों में मिलती है।
- अशोक में कुशल नेतृत्व तथा उच्चकोटी की युद्ध क्षमता थी, जो उसकी महान विजयों के रूप में उल्लेखित है।
- उसने लगभग सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप पर शासन किया।

- अशोक के समय स्थापत्य कला, लोक कला आदि का विकास हुआ।

(c) आजादी के पश्चात म०प्र० का पुनर्गठन →

महय भारत के हृदय स्थल के रूप में सुपरिचित किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से अछूता, पूरी तरह से भू-आवेष्ठित राज्य म०प्र० है।

- म०प्र० का वर्तमान रूप स्वतंत्रयोत्तर भारत की देन है।

- 1947 ई० में महय प्रांत (सेंट्रल प्रॉविंस) और बरार व में बघेलखण्ड व छत्तीसगढ़ की रियासतों को मिलाकर म०प्र० का राज्य बना जो कि भाग 'A' राज्य था और इसकी राजधानी नागपुर थी। उत्तर की 35 रियासतों को मिलाकर विंध्यप्रदेश नामक राज्य तथा पश्चिम की 25 रियासतों को मिलाकर महयभारत नामक भाग B राज्य बना। विंध्य प्रदेश की राजधानी रीवा व महय भारत की राजधानी छह-छह माह के लिए ग्वालियर व इंदौर थी। भोपाल एक पृथक राज्य था, जो भाग 'C' राज्य था। इसकी राजधानी भोपाल थी।

- राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिशों के अनुसार 1 नवम्बर 1956 को नवीन म०प्र० राज्य का गठन हुआ। इस समय म०प्र० के समीपवर्ती राज्यों के मध्य कुछ क्षेत्रों का आदान-प्रदान भी हुआ।

- 1956 में म०प्र० में कुल 43 जिले थे।
- 1972 में भोपाल व राजनंदगाँव दो नए जिले बने तथा जिलों की संख्या 45 हो गई।

- मई 1998 में बी.आर. दुबे की समिति कि सिफारिश पर 10 नए जिले तथा जुलाई 1998 में सिंहदेव समिति की सिफारिश पर 6 नए जिले बने। इस प्रकार कुल संख्या 61 हो गई।

- वर्ष 2000 में म.प्र. व छ.ग. का विभाजन हुआ तथा म.प्र. का पूर्वी क्षेत्र व 16 जिले छ. में चले गए।
- 2003 ई. में - अशोकनगर (गुना), बुरहानपुर तथा अनूपपुर का गठन हुआ।

- 2008 ई - सिंगरौली जिला बना।
- 2013 - आगरमालवा
- 2019 - निवारी
- वर्तमान में 52 जिले तथा 10 संभाग है।

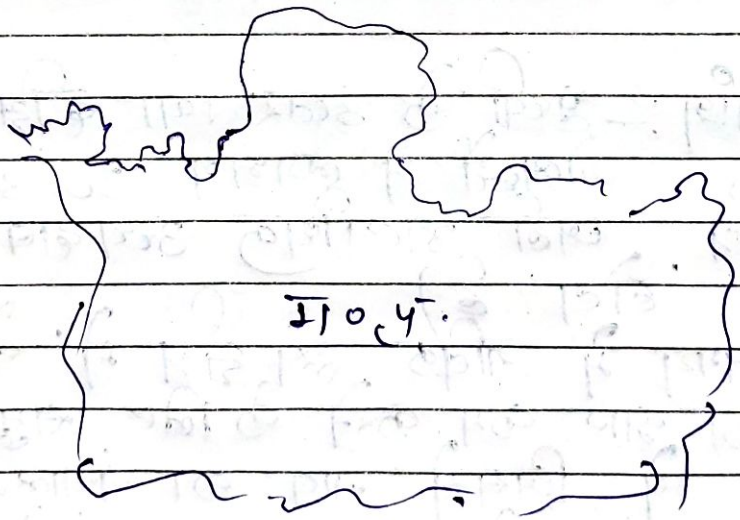

(Part - B)

1 (A) क्षारीय मृदा :- धरातल की सबसे ऊपरी महीन कणों से निर्मित परत मृदा कहलाती है।
- ऐसी मृदा जिसका pH मान सात से अधिक होता है। क्षारीय मृदा कहलाती है।

(B) शिलांग का पठार :- यह पठार ~~दक्कन~~ प्रायद्वीपीय क्षेत्र का उत्तर पूर्वी विस्तार है।
- यह पठार मुख्य रूप से मेघालय में पाया जाता है।
- इस क्षेत्र में सर्वाधिक वर्षा दर्ज की जाती है।

(C) भूकम्प के उलाभ :-
- भूकम्प भूपृष्ठ पर होने वाला आकस्मिक कम्पन है।
- प्राकृतिक पर्यावरण में कई तरह के परिवर्तन होते है।
- भूकम्प संभावित क्षेत्रों में मानव हस्ताक्षेप बहुत कम होता है।

(D) अश्व अक्षांश :- पृथ्वी के उत्तर तथा दक्षिण दोनों गोलार्द्धों में लगभग 30-35° अक्षांसो का क्षेत्र, जहाँ अत्यधिक उच्च दाब उपस्थित होता है।
- प्राचीन समय में नाविक इस क्षेत्र में घोड़ो को नाव का भार कम करने के लिए समुद्र में फेंक देते थे, जिससे नाव का संचालन आसानी से किया जा सके अतः इन अक्षांसो को अश्व अक्षांस कहा जाता है।

(E) नुनाटक :- टुंड्रा का एक अत्यधिक ठंडा क्षेत्र है
- यहाँ मानव आवास नहीं है।

(F) बंगाल का शोक :- दमोदर नदी को बंगाल का शोक कहा जाता है।
- इस नदी में बाढ़ से काफी नुकसान का सामना बंगाल के लोगों को करना पड़ता है।
- अमेरिका की टेनेसी नदी की परियोजना के आधार पर दमोदर नदी घाटी परियोजना का विकास किया गया है।

(G) म०प्र० में वर्षा के वितरण में असमानता है। म०प्र० के मालवा तथा मध्य उच्च प्रदेश, बुंदेलखण्ड जिसमें भिण्ड, मुरैना एवं ग्वालियर क्षेत्र समाहित है 75 से०मी० से कम वर्षा प्राप्त करते हैं।

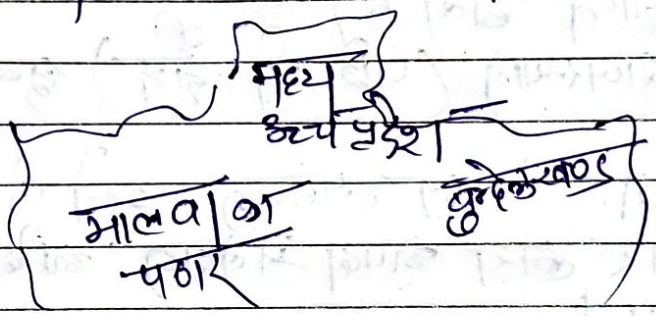

(H) भेल भोपाल :- भारत हेवी इलेक्ट्रिकल लिमिटेड
- सार्वजनिक क्षेत्र की इंजीनियरिंग व मैन्युफेक्चरिंग कम्पनी है।
- स्थापना 1964 ई.

I बावन थडी परियोजना :- बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाओं का पं. जवाहर लाल नेहरू ने आधुनिक भारत का मंदिर कहा है।
- यह परियोजना नर्मदा नदी पर निर्मित है।

(J) सोहागपुर कोयला क्षेत्र :- यह म०प्र० के पूर्वी क्षेत्र में अवस्थित है।
- यह कोयला गोंडवाना क्रम की चट्टानों से प्राप्त होता है।

- यहाँ लिग्नाइट प्रकार का कोयला पाया जाता है

(K) आपरेशन फ्लड :- इसे दुग्ध क्रान्ति भी कहा जाता है
- कि इसकी शुरुआत 1970 से मानी जाती है

(L) भारत की प्रमुख रोपण फसलें :- गेहूँ, चावल, सोयाबीन, मक्का, ज्वार बाजरा आदि।

(M) भारत में ~~अत्यधिक~~ कृषि मानसून से वर्षा प्राप्त होती है क्यों अनियमित प्रकृति का है
- अतः कुछ क्षेत्र में अधिक वर्षा तथा कुछ क्षेत्र में कम वर्षा प्राप्त होती है
- भारत में राजस्थान (पश्चिमी क्षेत्र) सूखा प्रभावित क्षेत्र है

(N) आपदाओं का उचित प्रबंधन करने के लिए सरकार द्वारा आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005 लाया गया।
- इसमे प्राकृतिक व मानवनिर्मित दोनो प्रकार की आपदाओं का उल्लेख है

(O) पेयजल की गुणवत्ता के मापदण्ड :- की दो श्रेणीयाँ है
(1) रसायनिक भौतिक - भारी धातु, कार्बनिक यौगिकों का पता लगाना।
(2) सूक्ष्मजीव - बैक्टिरिया आदि का पता लगाया जाता है

(2) (A) प्लेट विवर्तनिकी सिद्धान्त : हिमालय की उत्पत्ति के संदर्भ मे सर्वमान्य सिद्धान्त है

- इस सिद्धांत के अनुसार लगभग 200 मिलियन वर्ष पूर्व भारतीय प्लेट की अवस्थिति अफ्रीका तथा अंटार्कटिक के बीच थी

- तथा भारतीय प्लेट उत्तर-पूर्व की ओर गति कर रही
- लगभग 120 मिलियन वर्ष पूर्व भारतीय प्लेट एक हॉट स्पॉट के ऊपर से गुजरी जिस कारण इसके पश्चिमी सीमान्त पर भ्रंश रेखा का निर्माण हुआ। इस भ्रंश के सहारे मैग्मा का उत्थान हुआ तथा ज्वाला ज्वालामुखी उद्गार की प्रक्रिया सम्पन्न हुई। जिससे दक्कन का पठार, मालवा का पठार काठियावाड़ का पठार निर्मित हुआ।

- लगभग 40 मिलियन वर्ष पूर्व पहली बार भारतीय प्लेट अपनी पश्चिमी सीमा से यूरेशियाई प्लेट से टकराई जिससे अवसादों में वलन उत्पन्न हुआ। तथा उत्थान हुआ. और हिमालय की उत्पत्ति हुई।

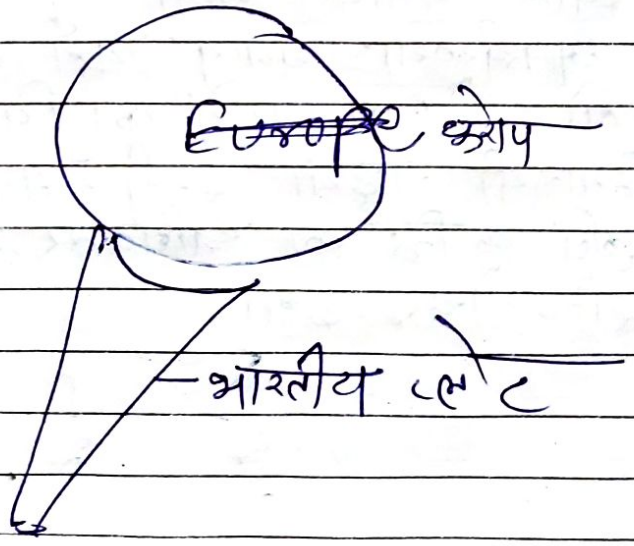

~~Q. 2. नदी~~

(2) (B) नदी द्वारा निर्मित स्थलाकृतियाँ :—

(1) जलोढ़ पंख,

(2) दोआब,

(3) एश्चुरी

(4) डेल्टा

(5) व नदिय द्वीप आदी।

2 (C) भारत के उत्तर में विशाल मैदानों का निर्माण हिमालय की उत्पत्ति के साथ ही हुआ है। यह मैदान भारत की महान संस्कृति के पोषक है तथा इनके इतिहास से भारत के इतिहास का वर्णन किया जा सकता है।

महत्व :—

(1) यह मैदान उपजाऊ मृदा से उच्छादित है जलोढ़ मृदा।

(2) जल पर्याप्त मात्रा में उपस्थित है।

(3) जनसंख्या घनत्व यहाँ ज्यादा है।

(4) बड़े-बड़े महानगरों का विकास इसी क्षेत्र मे हुआ है।

(5) हिमालयी नदियाँ इन्ही मैदानो से होकर गुजरती है।

(6) कृषि क्रान्ति का अधिकतर प्रभाव इसी क्षेत्र मे दृष्टिगोचर हुआ।

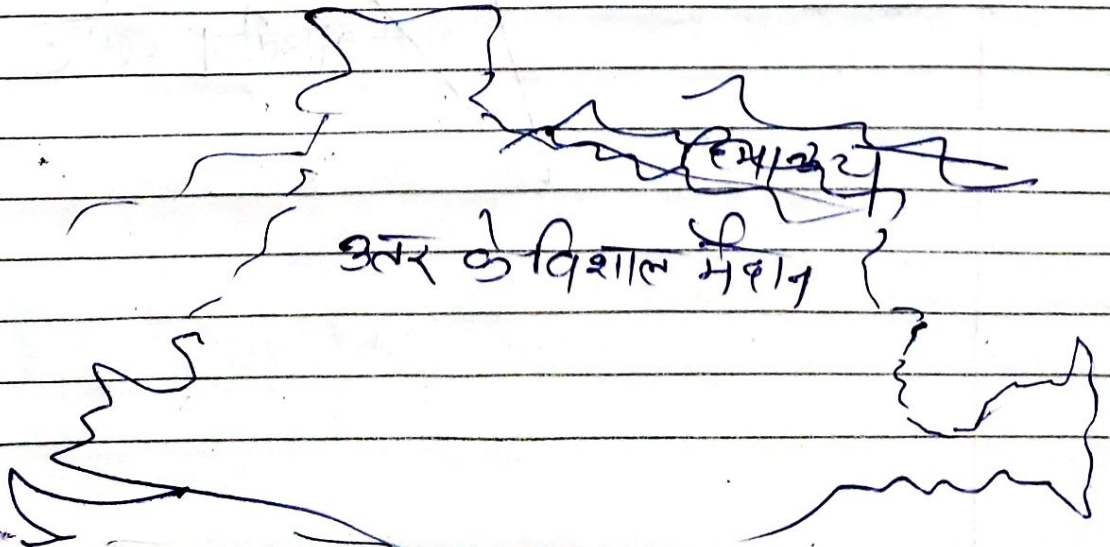

(D) :- "जल है तो कल है" अतः जल संसाधनों का संरक्षण मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए अति आवश्यक है।

जल संसाधनों के संरक्षण के लिए प्रमुख तत्व :-

- प्रदूषित जल या अन्य पदार्थों को सीधा किसी भी जल स्त्रोत में न फैंकना।
- कारखानों से निकलने वाले जल को उपचार के बाद ही जल स्त्रोत में प्रवाहित होने देना।
- जल का दोहन आवश्यकतानुसार ही करना।
- अनावश्यक जल का दुर्पयोग न करना।
- सामाजिक जागरूकता बढ़ना।
- वर्षा के जल के उचित संरक्षण के उपायों को अपनाना।
- सरकार द्वारा जल के महत्व को ध्यान में रखते हुए पृथक जल मंत्रालय का निर्माण किया है तथा विभिन्न नदी घाटी परियोजनाओं का निर्माण कार्य चल रहा है। जन जागरूकता व सरकार के प्रयास से जल संरक्षण किया जा सकता है।

(E) भूस्खलन :- पहाड़ी क्षेत्रों में अधिक देखने को मिलता है। इस दौरान भारी मात्रा में चट्टानी मलवा नीचे आ जाता है तथा अत्यधिक मानवीय व पर्यावरणीय क्षति होती है।

भूस्खलन को कम करने के उपाय :-

(1) - पर्वतीय क्षेत्रों मे निर्माण कार्य अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार किया जाना चाहिए।
- वृक्षारोपण
- वनों कि कटाई को रोककर
- विभिन्न प्राकृतिक क्षेत्रों मे मानव के लालच की सीमा का निर्धारण किया जाना चाहिए तथा सुझाव समिति का गठन कर ही निर्माण कि कार्य किया जाना चाहिए। जैसे पश्चिमी घाट में निर्माण कार्य शुरु करने से पूर्व विभिन्न समितियों का गठन किया गया जिनमे से एक कस्तूरिरंगन समिति थी।
- नदियों के अपवाह क्षेत्र में मानव बस्तियो का निर्माण नही किया जाना चाहिए।

भूस्खलन एक अत्यंत विनाशकारी घटना है जो हाल ही मे उत्तराखण्ड के एक ग्रामीण क्षेत्र मे देखने को मिली समाज की जागरूकता से ही इस घटना को न्यून किया जा सकता है।

(G) हरित क्रान्ति सत्तर के दशक मे कृषि क्षेत्र में हुए अत्यधिक उत्पादन से संबंधित है हरित क्रान्ति के जनक डॉ नॉर्मन बोरलॉग है तथा भारत में इस क्रान्ति के जनक डॉ. स्वामीनाथन है।

- हरित क्रान्ति से जहाँ अत्यधिक लाभ हुआ वहाँ कई समस्याएँ भी उत्पन्न हुई जैसे!-

- जिन क्षेत्रों में हरित क्रान्ति हुई वहाँ अत्यधिक उर्वरकों का प्रयोग किया गया जिससे भूमी की उर्वर क्षमता का ह्रास हुआ तथा कुछ क्षेत्रों की आज की दशा आज कार्बली शुष्कता की अवस्था में पहुँच गई है।

- भूमिगत जल का दोहन हुआ।
- यह क्रांति सम्पूर्ण भारत में नही फैल पाई। उत्तर भारत में इसका ज्यादा प्रभाव दृष्टिगोचर हुआ
- इस क्रान्ति के तहत गेहूँ, चावल का अत्यधिक उत्पादन हुआ, अन्य फसलों का पर ध्यान नही दिया गया।
- राज्यों के मध्य भौगोलिक संकेतक प्राप्त करने को लेकर द्वन्द की स्थिति उत्पन्न हुई।
- उचित भण्डारण की व्यवस्था न होने के कारण अन्न का उत्पादन तो अत्यधिक हुआ परन्तु इसका व उचित वितरण सुनिश्चित नही हो पाया

(H) मध्य प्रदेश के प्रमुख खाद्य प्रसंस्करण उद्योग।
राज्य में प्रथम पंचवर्षीय योजना में कृषि क्षेत्र को तथा द्वितीय पंचवर्षीय योजना में उद्योगों को प्राथमिकता दी गई थी।
खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में कृषि से प्राप्त खाद्य पदार्थों का प्रसंस्करण करके उन्हे लम्बे समय तक उपयोग के लायक बनाया जाता है। जैसे आलू से चिप्स बनाना आदि।
म० प्र० में प्रमुख खाद्य प्रसंस्करण उद्योग :-
(1) चीनी उद्योग - गन्ने से चीनी बनाई जाती है तथा भोपाल शुगर मिल्स लि०, दलौदा, डबरा आदि जगह पर यह कारखाने स्थित है।

- वनस्पति घी :- मुख्यता सोयाबीन, मूँगफली, सूरजमुखी आदि का उपयोग किया जाता है।

- सोयाबीन तेल उद्योग आदि।

(I) म०प्र० के प्रमुख कृषि क्षेत्र :-

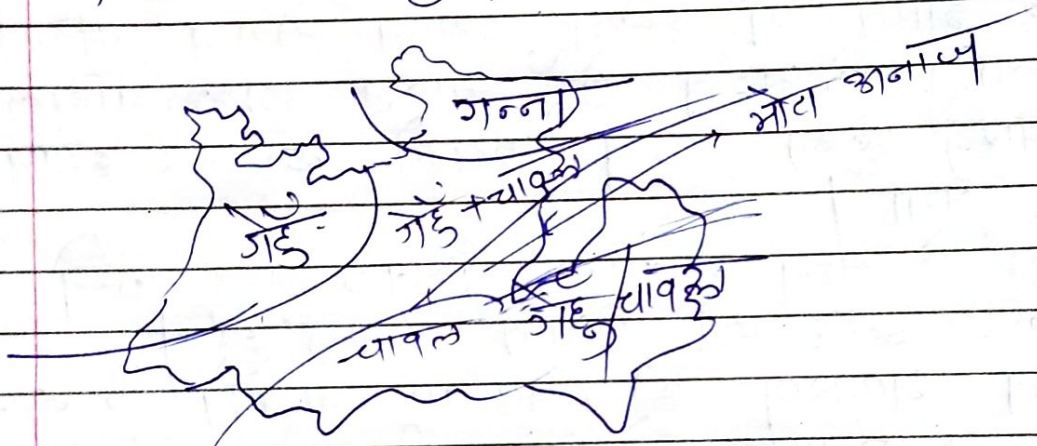

कृषि विभाग द्वारा म०प्र० को 5 कृषि क्षेत्रों में विभाजित किया गया है।

(1) पश्चिम में काली मिट्टी का मालवा क्षेत्र :-
(2) उत्तर में ज्वार गेहूँ का प्रदेश।
(3) मध्य में गेहूँ का प्रदेश।
(4) गेहूँ चावल का प्रदेश।
(5) संकुर्ण पूर्वी म०प्र० (चावल का प्रदेश)

(7) बुन्देलखण्ड का पठार :- म०प्र० के मध्य उत्तरी भाग के विस्तृत क्षेत्र को बुंदेलखण्ड पठार के नाम से जाना जाता है।

- ग्रेनाइट व नीस चट्टानों से इस क्षेत्र का निर्माण हुआ है। अतः काली मिट्टी पाई जाती है।
- काली मिट्टी कृषि / कपास की खेती के लिए अत्यन्त उपयोगी है। कपास का उपयोग सूती वस्त्र उद्योग में मुख्यतः किया जाता है।
- खनिज सम्पदा की दृष्टि से यह प्रदेश धनी है। छतरपुर, पन्ना में हीरे की खदानें स्थित है।
- कृषि - ज्वार इस क्षेत्र की प्रमुख फसल है।
- प्रमुख पर्यटन स्थल - ग्वालियर किला, दतिया का शक्तिपीठ, ओरछा आदि।

अतः बुन्देलखण्ड का पठार आर्थिक दृष्टि से समृद्धशाली है।

(8) मृदा अपरदन एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें विभिन्न प्राकृतिक तथा मानव निर्मित कारकों के प्रभाव से मृदा का क्षरण होता है।

- मृदा अपरदन का मुख्य कारण मानवीय क्रियाओं को माना जाता है, परन्तु कुछ अपरदन प्राकृतिक क्रियाओं के प्रभाव में भी होता है जैसे ज्वालामुखी उद्भेदन, बाढ़, भूकम्प आदि।
- बढ़ती जनसंख्या वृद्धि के कारण नए आवास के निर्माण के लिए वनों की अंधाधुंध कटाई कर रहा है जो मृदा अपरदन का

प्रमुख कारण है
- प्राकृतिक क्रियाओं में अत्याधिक हस्तक्षेप

अतः मानव की महत्वकांक्षाओं ने प्रकृति को अभूतपूर्व क्षति पहुँचाई है
"महात्मा गांधी के अनुसार मानव की आवश्यकता की पूर्ति के लिए पृथ्वी पर प्रचुर संसाधन है, परन्तु लालच की पूर्ति के लिए नहीं"

---

(3) (A) औद्योगिक विकास - अर्थात ज्यादा से ज्यादा उद्योगों की स्थापना तथा अनेक उत्पादन कार्य प्रारम्भ करना।
- म०प्र० में प्रथम पंचवर्षीय योजना से ही औद्योगिक विकास का क्रम शुरु हो गया था जो आज तक जारी है।
- म०प्र० खनिजों की दृष्टि से सम्पन्न प्रदेश है,
- वर्तमान सरकार द्वारा भी अनेक योजनाओं व रियायतों के माध्यम से अनेक उद्योगों को म०प्र० में स्थापित करने के लिए प्रयास किया जा रहा है।
- पिछले वर्ष इन्दौर में सम्पन्न औद्योगिक सम्मेलन इसी दिशा में किया गया महत्वपूर्ण प्रयास था।

- प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से सम्पन्न इस प्रदेश में पूंजी को आकर्षित करके विभिन्न उद्योग स्थापित किए जा सकते हैं।
अतः कहा जा सकता है कि म०प्र० में औद्योगिक विकास की संभावना अत्याधिक है।

- उद्योग संवर्द्धन नीति 2014, नवीन संशोधित नीति है जिसमें बताया गया था कि - अनुकूल नीतियों व निवेश मित्र परिवेश के फलस्वरूप औद्योगिकरण की गति में तेजी आई है।

- म०प्र० एम. एस. एम. ई. विकास नीति - 2017 आदि म०प्र० में औद्योगिक विकास के लिए अनुकूलत स्थितियाँ हैं।

(B) म०प्र० में वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार कुल आबादी का 21.1% अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या है। जो भारत में सर्वाधिक है।

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद - 342 में सूचीबद्ध जातियाँ अनुसूचित जनजातियाँ कहलाती हैं।
- म०प्र० में सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति के लोग। जनसंख्या के आधार पर धार में तथा प्रतिशत की दृष्टि से अलीराजपुर (89%) है।
- राज्य में मान्यता प्राप्त कुल जनजातियाँ लगभग 46 हैं।

- मध्यप्रदेश में निम्न 6 प्रमुख जनजातियाँ पाई जाती हैं।
- भील, गोंड, कोरकू सहरिया, बैगा, कोल, भारिया आदि
- सहरिया भारिया बैगा अत्यधिक पिछड़ी जनजातियाँ हैं।
- म०प्र० में भील, गोंड, कोल सबसे बड़ी जनजातियाँ हैं।
- म०प्र० में भीलों की संख्या का प्रतिशत सर्वाधिक है।

- गोंडो की आबादी दूसरे स्थान पर है।

जनजातियाँ एवं उनकी विशेषताऐं ! -

• भील :- जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ी जनजाति है, भील शब्द की उत्पत्ति तमिल भाषा के विल्लुवर शब्द से हुई है, जिसका अर्थ धनुष होता है।

विशेषताऐं - समाज - पितृसत्तात्मक

- उपजातियाँ - भिलाला, बरैला आदि
- पर्व - भगोरिया हाट, जातरा, चलावनी
- आर्थिक - प्रायः किसान होते हैं इनके द्वारा की जाने वाली खेती को चिमाता कहा जाता है। कुछ भील डकैती भी करते हैं

• गोंड :- शब्द का अर्थ पर्वत या पहाड़ है। यह जनजाति पर्वतीय क्षेत्र में निवास करती है, म०प्र० में नर्मदा के दोनों ओर यह जनजाति का निवास क्षेत्र है।

- यह भारत की सबसे बड़ी जनजाति है
- म०प्र० की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है।

- इनमें दूध लौटावा तथा प्रचलित है।

• बैगा - यह एक आदिम जनजाति है। म०प्र० में बालाघाट, मंडला क्षेत्र में पाई जाती है।

• भारिया :- अत्यंत पिछड़ी जनजाति है। यह छिंदवाड़ा जिले में मुख्यतः पाई जाती है

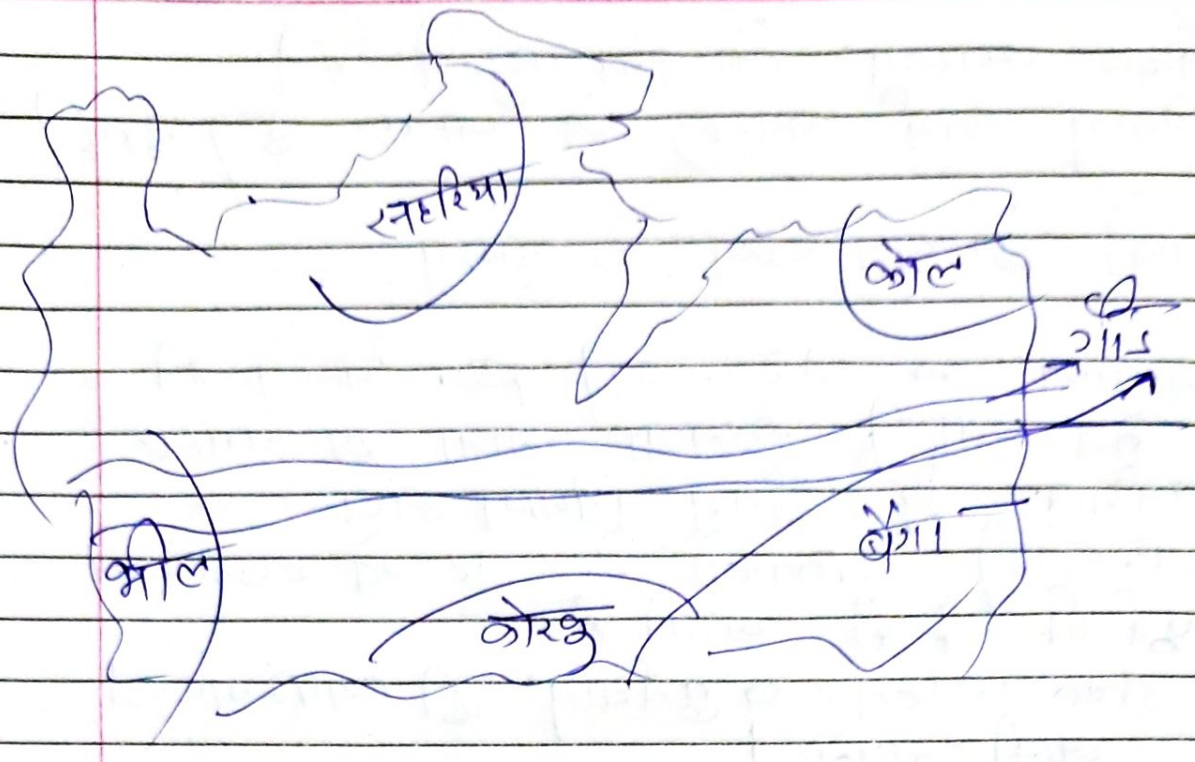

3 (D)
उष्ण कटिबंधीय चक्रवात निम्न वायु दाब वाले अभिसरण क्षेत्र होते हैं। जिनकी उत्पत्ति 5° से 30° उत्तरी व दक्षिणी अक्षांशों से महाद्वीपों के पूर्वी तट पर या महासागरों के पश्चिमी तट पर अन्तरदेशीय सागरों के ऊपर होती है।

प्रभाव :- चक्रवात एक सामान्य ऊष्मा विनिमय क्रिया विधि है जो कि किसी क्षेत्र के ऊष्मा बजट पर व्यापक प्रभाव छोड़ती है।

- जलवायवीय परिघटनाओं में अंतर लाते हैं।
- इनमें पवनों का वेग लगभग 120 K.m/h. से अधिक होता है। जो महाद्वीपों में प्रवेश करने पर अत्यधिक विध्वंसक होता है।
- लाइट के कनेक्शन खराब हो जाते हैं, इमारतें गिर जाती हैं, सड़के टूट जाती हैं, यातायात बाधित होता है, जन तथा धन की अत्यधिक हानी होती है।

- संचार व्यवस्था को क्षति पहुँचती है।
- विकास कार्य अवरुद्ध हो जाता है। आदि।

प्रभावों को कम करने के उपाय :—

- चक्रवात की जानकारी मिलते ही क्षेत्र खाली कराया जाना चाहिए वर्तमान में मौसम विभाग द्वारा यह जानकारी चक्रवातों के तट से टकराने से पूर्व ही दे दी जाती है।
- उचित राहत व पुनर्वास की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- चेतावनी केन्द्रों की स्थापना करना।
- आपदा प्रबंधन संसाधनों का युक्तियुक्त प्रबंधन करना। आदि।